घनसंकुलन
(Crowding)

घनसंकुलन एक महत्वपूर्ण संप्रत्यय है जिसके माध्यम से समाज मनोवैज्ञानिकों द्वारा व्यक्ति के व्यवहार पर पड़ने वाले समूह प्रभावों का अध्ययन किया गया है। सामान्यतः घनसंकुलन से तात्पर्य एक जगह में अधिक लोगों के एकत्रित हो जाने से उत्पन्न स्थिति से होता है। दूसरे शब्दों में, घनसंकुलन प्रति व्यक्ति उपलब्ध स्थान को छोटा या कम समझने से होता है। यह व्यक्ति की एक ऐसी मनोवैज्ञानिक अवस्था है जो घनत्व से सीधे सम्बन्धित हो भी सकता है या नहीं भी हो सकता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने घनसंकुलन को इस प्रकार परिभाषित किया है—

Stocols (1972) के अनुसार, "स्थानिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत कारकों की अन्तःक्रियाओं से उत्पन्न अभिप्रेरणात्मक अवस्था को घनसंकुलन कहा जाता है।"

Feldman (1985) के अनुसार, "घनसंकुलन से तात्पर्य एक परिस्थिति में उत्पन्न मनोवैज्ञानिक या आत्मगत कारकों से होता है — किसी विशेष स्थान में व्यक्तियों की जो भी संख्याओं को व्यक्ति किस तरह प्रत्यक्षण करता है।"

अर्थात् परिस्थिति में 2-4 व्यक्तियों के होने पर भी व्यक्ति अधिक घनसंकुलन का अनुभव कर सकता है या फिर 50 हजार व्यक्ति के बीच में भी होने पर घनसंकुलन का अनुभव वह नहीं कर सकता है। घनसंकुलन एक तरह का नकारात्मक मनोवैज्ञानिक अनुक्रिया है। इससे व्यक्ति का कार्य निष्पादन, अन्तर्वैयक्तिक संबंध तथा स्वास्थ्य बुरी तरह से प्रभावित होता है।

मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से यह पता चला है कि घनसंकुलन का भाव व्यक्ति में तब उत्पन्न होता है जब वह अपने भीतर उलझन महसूस करता है और इस उलझन का कारण स्थानगत प्रतिबंध (spatial restriction) को मानता है। घनसंकुलन के भाव का संबंध व्यक्तियों के घनत्व से होता है। मनोवैज्ञानिकों द्वारा ऐसे घनत्व के दो मुख्य प्रकार बतलाये गए हैं— सामाजिक घनत्व तथा स्थानगत घनत्व। जैसे-जैसे किसी विशेष स्थान पर व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि होती

सामाजिक घनत्व वैसे-वैसे बढ़ता है। स्थानगत घनत्व तब बढ़ता है, जब व्यक्तियों की दी गयी संख्या के लिए उपलब्ध स्थान में कमी आने लगती है। सामाजिक तथा स्थानगत घनत्व अधिक होने से विभिन्न तरह के व्यवहारों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता पाया गया है। पाउलस तथा उनके सहयोगियों ने अपने अध्ययन में पाया कि ऐसे उच्च घनत्व से जटिल कार्यों पर व्यक्ति का निष्पादन प्रभावित हो जाता है। परंतु साधारण कार्यों पर उसका कोई स्पष्ट प्रभाव नहीं पड़ता है।